सं० भ्रो॰ वि०/रोहतक/58-81/15027---चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० इस्टर्न लेकोट्रीज प्रा॰ लि॰, एम. अ।ई. ई., वहादुरगड़, जिता रोइतक, के श्रमिक श्रोमती राज कौर मार्फत प्रधान, एच एम. जो. मजदूर यूनियन, बहादुरगढ़, जिला रोहतक तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामल में कोई श्रीदींगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यवाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641—(1)—श्रम 78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादअस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्गय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादगस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित है:—

क्या श्रीमती राज कौर की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो विव /रोहतक/58-87/15034.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं इस्टर्न लेबोट्रीज प्रा० लि॰ एम. श्राई. ई., बहादुरगढ़, जिला रोहतक, के श्रीमक श्री मामराज मार्फत प्रधाम, एच एन. जी मजदूर यूनियन, बहादुरगढ़ जिला रोहतक तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोधोगिक विवाद है;

भीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है;

इसलिए, श्रब, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं0 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठि सरकारी श्रधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं एंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के धीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत प्रथवा सम्बन्धित है:—

क्या श्री मामराज की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहृत का हकदार है ?

दिनांक 2 श्रप्रैल, 1987

सं श्रो० वि०/एफ०डी०/106-86/13854.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० एलाईड मकेनीकल इण्डस्ट्रीज, सैक्टर 15, ग्रजरोंदा, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री पारस नाथ, पुत्र रामघारी मार्फत हिन्द मजदूर सभा, 29, शहीद चौंक, फरीदाबाद तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है:

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवा द को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इस लिये, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिष्ठिनियम, 1947 की घारों 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिक्तियों का प्रयोग करते हुये हिरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रिष्ठिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए श्रिष्ठसूचना सं० 11495-जी-श्र म-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिष्ठिनयम की धारा 7 के श्रिष्ठीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिणय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री पारस नाथ की सेवाओं का समापन न्यायोचित हथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं० भ्रो० वि०/पानी/25-87/13866.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० शाहकुम्भरा फिनीशिंग वर्कस, देसराज कालौनी, पानीपत, के श्रमिक श्री ब्यास मुनी, उपाध्याय मार्फंत टैक्सटाईल मजदूर संघ, देवी मन्दिर रोड, पानीपत त्वा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीशोगिक विवाद है;

भी र चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, औद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिन्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 3 (44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984-द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला हैं या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला हैं :—

क्या श्री ब्यास मुनी, उपाध्याय की सेवा समाप्त की गई है या उसने स्वयं कार्य से गैर-हाजिर रहकर नौकरी से लियन खोया है? इस विन्दु पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत का हकदार है?

सं० भो० वि०/एफ०डी०/42-87/13873 — चूर्कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० इस्पैटिक्स एक्सपोर्ट प्रा० लि०, 241, उद्योग बिहार, गुड़गांव, के श्रमिक श्री राम प्रकाश मार्फत श्री महाबीर त्यागी, इन्टक यूनियन, दिल्ली रोड़, गुड़गांव तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद ग्रिविनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीविसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए ग्रिविसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रीविनियम की धारा 7 के ग्रीवीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राम प्रकाश की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 3 ग्रप्रैंल, 1987

सं०. श्रो. वि./रोहतक/39-87/13962. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० श्री राम सिन्थेटिक्स फैब्रिक्स, एम. ग्राई. ई., 329, बहादुरगढ़, के श्रीमक श्री पोलू राम पंवार, मकान नं० 322, वार्ड नं० 14, पुराना झझर रोड़, बहरा कबाड़ी के सामने बहादुरगढ़ जिला रोहतक तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इस के बाद लिखित मामलें में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिनर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, ग्रोद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं० 9641-1-श्रम 78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी ग्रधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से मुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित है :---

क्या श्री पोलू राम पंवार की सेवाधों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 8 ग्रप्रैल, 1987

सं ग्रो वि । पानी 21-87 | 14486 -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं हरित आपट ई आर इस्लय्, जी ब्टी रोड़, पानीपत (करनाल), के श्रीमक श्री ग्रोम प्रकाश मार्फत भारतीय मजदूर संघ कार्यालय, जी ब्टी रोड़, पानीपत तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर बृंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस्रेलिए, धन, धोद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी शक्तिसूचना सं० 3 (44) 84-3-8म, विनांक 18 हर्रल, 1884, द्वारा इक्त श्रीविनयम की झारा 7 के श्रीविक शक्ति सम न्यायालयः ग्री श्रव्याला की दिवादशस्त ग्रा 593 सम्बन्धि शीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रामक के बीच या तो विवाहप्रस्त मामला है या दिवाद से सुसंगत प्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री श्रीम प्रकाश की रैवाओं का समापन व्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं श्रोठ वि०/पानी/21-87/14493.—चं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैठ रहिल कापट, ई० श्रारठ डब्लयू०, जीठटी० रोड़, पानीपत (करनाल), के श्रीमक श्री विजय कुमार, मार्फत भारतीय मजदूर संघ, जीठ टी० रोड़, पानीपत तथा उसके प्रवत्थकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलियें, मब, मौद्योगिक विवाद मधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के उप्छ (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी मधिसूचना सं० 3 (44)84-2-अम, दिनांक 18 मर्फल, 1984 द्वारा उक्त मधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम त्यायालय, भ्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला त्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतू निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवाधकों तथा अधिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्याश्री विजय कुमार की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो वि वि 21-87/14500 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं स्टील काक्ट ई आर इस्लयू , जी टी रोड़, पानीपत (करनाल) के श्रमिक श्री श्रोमवीर मार्फत भारतीय मजदूर संघ, जी टी रोड़, पानीपत तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई श्री शोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं० 3(44)84-3 श्रम, दिनांक 18 श्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हुँतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री श्रोमवीर की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकवार है ?

दिनांक 13 घप्रैल, 1987

सैं० ग्रो॰वि॰/एफ॰डी॰/28-87/14974.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं॰ सुपर स्विच, प्रा॰ लिं॰, प्लाट नं॰ 5, सैक्टर 6, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री राम श्रीतार, पुत श्री भूषण मार्फत फरीदाबाद कामगार यूनियन, 2/7, गोरो कालोनी, पुराना फरीदाबाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीखोगिक विवाद है;

भोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, भोद्योगिक विवाद, श्रीधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई कित्तमों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त श्रीधिनयम की धारा 7-क के श्रीधीन गठित श्रीधोगिक श्रीधिकरण, हरियाणा, फरीदावाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा अमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामले हैं अथवा विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं :---

क्या श्री राम श्रोतार की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

ग्रार० एस० ग्रग्नवाल, उप-सचिव, हरियाणा सरकार, अम विभाग।